



BIKANER KE USTA KALAKAR – MOHAMMAD HANIF USTA

बीकानेर के उस्ता कलाकार – मोहम्मद हनीफ उस्ता

Taruna Rajpurohit

Lecturer, Department of Design, Vansthali Vidhyapith, Rajasthan, India.

मो. हनीफ उस्ता, यह नाम उस्ता कला के क्षेत्र में देश भर में चर्चित है। बीकानेर के रहने वाले यह महान् व वरिष्ठ कलाकार अपनी विचित्र शैली स्वर्णयुक्त मुन्नवत व नक्काशी के लिए जाने जाते हैं। जहाँ कहीं भी उस्ता कला के विषय में चर्चा की जाती है, तो अनायास ही हनीफ जी का नाम उस चुनिन्दा कलाकारों में लिया जाता है। इन्होंने बीकानेर को उस्ता कला के क्षेत्र में हिसामुद्दीन जी के सपने को साकार कर एक अलग पहचान दिलवाई।

भारत सरकार द्वारा हनीफ जी को कई दफा उस्ता कला के प्रदर्शन हेतु विदेश यात्रा का अवसर प्रदान किया गया। इन्हें 1993-94 में विएना (ऑस्ट्रिया) में उस्ता कला के प्रदर्शन हेतु भेजा गया। इन्होंने अपने हुनर को वहाँ के कलाकार के साथ साझा किया तथा उस्ता कला की सम्पूर्ण जानकारी दी। 1995 में (वारसा) पौलेण्ड भेजा गया। 2005 में “हस्तशिल्प निर्यात संवर्द्धन संस्थान” एवं “वस्त्र मंत्रालय-भारत सरकार” द्वारा हनीफ जी को पुनः पौलेण्ड में उस्ता कला के प्रदर्शन हेतु भेजा गया। इन्हें वहाँ जाकर बीकानेर की उस्ता कला का जीवन परिचय देकर वहाँ उस्ता कला की शोभा बढ़ाने का अवसर प्राप्त हुआ।

2007 में (पनामा) अमेरिका में अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेले में जाने का अवसर प्राप्त हुआ। इस दौरान इन्होंने इटली अटलांटा, वेनेजुएला व कोस्टारिका होते हुए अपनी विदेशी कला यात्रा पूर्ण कर उस्ता कला के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ आयात-निर्यात के रास्ते खोल दिये।

मो. हनीफ उस्ता को भारत सरकार द्वारा उस्ता कला के प्रदर्शन हेतु कई आदि देशों में भेजा गया परन्तु वर्तमान में सरकार उस्ता कला की ओर बेरुखी दिखाने के सिवाय और कोई कार्य नहीं कर रही। स्वयं हनीफ जी अपने स्तर पर इसे बढ़ावा दे रहे हैं।

निजी संस्थाओं द्वारा इन्हें अपने अन्तर्गत कार्य करने के नियमित अवसर दिये गये, परन्तु ये जहाँ भी जाते वहाँ से कार्य पूर्ण हो जाने के बाद वापस अपने देश भारत लौट आते। यह उनका देश प्रेम ही है जो उन्हें नाम और शौहरत कमाने के लोभ से बचाये हुए है। हनीफ जी बीकानेर रह कर ही उस्ता कला को प्रगतिशील बनाये रखने में प्रयासरत रहना चाहते हैं।

मो. हनीफ उस्ता ने जब से उस्ता कला को अपने जीवन का

हिस्सा बनाया तब से अब तक इसके लिए अपना सम्पूर्ण जीवन अर्पित कर दिया है। चाहे जो भी परिस्थिति रही हो, इन्होंने कभी हार नहीं मानी, चाहे वह पारिवारिक परेशनियाँ हों या फिर सरकारी तन्त्र द्वारा की गई बेरुखी।

बीकानेर में जिस समय “कैमिल हाईड ट्रेनिंग सेन्टर” की शुरुआत हुई उस समय उस्ता कला को सीखने वाले मात्र 7-8 नव कलाकार व एक प्रशिक्षक थे। वें प्रशिक्षक थे हिसामुद्दीन उस्ता। आज ना तो वे प्रशिक्षक रहें और ना ही वह ट्रेनिंग सेन्टर। रह गये तो बस सेन्टर व हिसामुद्दीन जी के प्रथम शिष्य- मो. हनीफ उस्ता।

जब केन्द्र को बन्द कर देने के आदेश आये तब वहाँ नाममात्र ही शिष्य उस्ता कला का कार्य सीखने आया करते थे और प्रशिक्षक फिर से वहीं एक- हनीफ जी। हनीफ जी हार न मानते हुए हिम्मत से काम लिया और अपने दम पर प्रशिक्षण देते रहें। हनीफ जी का तबादला (स्थानान्तरण) कर दिया गया और जयपुर के “राजस्थली-शो-रूम” में “क्राफ्ट्स मैन” के पद पर नियुक्त कर दिया गया। यहाँ इन्हें उस्ता कला से अलग रखने के प्रयास किये गये और शोरूम में रखे पुराने व टूटे-फूटे सामानों की मरम्मत का कार्य सौंपा गया। काफी समय पश्चात् इन्हें एक निश्चित काउण्टर दिया गया और सरकारी काम-काज (हिसाब-किताब) में उलझा दिया गया।

इतना सब कुछ होने के बाद भी इनका उस्ता कला के प्रति प्रेम और योगदान कम नहीं हुआ। परिणाम स्वरूप उस्ता कला का कार्य विकास पर रहा और साथ ही इनका शब्द लेखन का कार्य निरन्तर चलता रहा। इन्हें दिल्ली, अजमेर, आगरा, सीकर, बीकानेर, मुम्बई, ऋषिकेश आदि हर क्षेत्र में मरम्मत के कार्य के साथ-साथ निजी संस्थानों, होटलों व घरों में उस्ता कला का कार्य निरन्तर मिलता रहा। यहाँ वे स्वयं तो नहीं जा पाते थे, परन्तु इनके बड़े बेटे जावेद उस्ता व इनके शिष्य जाकर कार्य को अन्जाम देते थे।

हनीफ जी ने सरकारी नौकरी से सेवानिवृत्ति (30 जून, 2018) के बाद अपने निजी कार्य व उस्ता कला की ओर ध्यान देने का फैसला लिया। इनके जीवन का उद्देश्य उस्ता कला का विकास है। इन्होंने अपना जीवन अब उस्ता कला कार्य की साधना एवं उत्थान हेतु समर्पित कर दिया है। मो. हनीफ उस्ता को भारत में आने वाले देशी-विदेशी मेहमानों को

उपहार स्वरूप अपने हाथों की बनी उस्ता कृति के नमूने फोटो-फ्रेम, झरोखे व ऊँट की खाल से बने लेम्प इत्यादि भेंट करने हेतु भी जाने जाते हैं। इन्होंने भारत के महामहिम राष्ट्रपति, इन्दिरा गांधी, राजीव गांधी, सोनिया गांधी, श्री शंकर दयाल शर्मा, रवि शंकर महाराज, वसुन्धरा राजे सिंधिया, शिवचरण माथुर, एस. के. जैन राजस्थान के पूर्व गवर्नर इत्यादि एवं विदेशी मेहमान विवन ऐंलिजाबेथ, इंग्लैण्ड एवं हेमलैट कॉल इत्यादि को सप्रेम भेंट किया है।

मो. हनीफ उस्ता जी के हाथों के जादू का असर सम्पूर्ण विश्व में ख्याति प्राप्त है। इनके हाथों से बनी उस्ता कृतियाँ विश्व के कई बड़े देशों में संग्रहित हैं। यह “उस्ता कला” के लिए बहुत बड़ी उपलब्धि है कि तुर्की, इरान, इटली इत्यादि देशों के बड़े नेता, विदेशी राजदूत और विशिष्ट (VIP) व अतिविशिष्ट (VVIP) के यहाँ उस्ता कला के नमूने संग्रहित हैं।

मो. हनीफ उस्ता को उनके उत्कृष्ट योगदान के बल पर समय-समय पर भारत सरकार द्वारा सम्मानित भी किये गये हैं। वर्ष 1983 में राज्य स्तरीय मेरिट अवार्ड, 1989 में राज्य स्तरीय पुरस्कार, वर्ष 1991 में राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। 1982 में जिला प्रशासन द्वारा रजत पदक, 2005-2006 में “शिक्षा रत्न” से दिल्ली में नवाजा गया। ऊँट के चमड़े से बने टेबल लैम्प व आभूषण तथा संगमरमर पर सोने की नक्काशी के लिए इन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार से नवाजा गया है।

महावीर स्वामी (वरिष्ठ लघु चित्रण शैली कलाकार, बीकानेर) द्वारा कहा गया कि हनीफ जी ने जो उस्ता कला में अपना योगदान दिया है, वह अतुल्य है। इनके द्वारा इस क्षेत्र के लिए हर तरह से प्रयास करते रहते हैं। वे नित नये प्रयोग किया करते हैं। इनकी यही मेहनत और लगन उस्ता कला को शिखर तक लेकर जाने में सहयोग करती है। इनके हाथों में इतनी बारीकी व सफाई एवं लयात्मकता है कि वह महसूस किया जा सकता है।

मो. हनीफ उस्ता अपने हुनर को अपने तक ही सीमित नहीं रखना चाहते। वे चाहते हैं कि उस्ता कला जो आज विलुप्ति के कगार पर है, उसे जन-साधारण तक पहुँचाया जाये। उसके लिए वे निजी संस्थानों के सहयोग से प्रति वर्ष कार्यशाला के अन्तर्गत प्रशिक्षण प्रदान करने की योजना बनाते हैं। NIFT, NID, NIFD, IICD एवं BV (वनस्थली विद्यापीठ- राजस्थान) आदि इनकी इस योजना को पूर्ण करने में पूर्ण सहयोग करते हैं। समय-समय पर हनीफ जी को अपने प्रांगण में आमंत्रित कर कार्यशाला का आयोजन रखते हैं।

नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ फेशन टेक्नोलॉजी (NIFT) दिल्ली के लगभग 4 वर्कशॉप लगाए गए। जिनमें छात्रों ने कार्य सीखा। NIFT के जरिए (Motif) नमूने बनाकर फैशन तकनीक के जरिए बाजार में उतार दिये हैं एवं हैण्डि क्रॉफ्ट के

जरिए सभी जगह उपलब्ध है। नेशनल इन्स्टीट्यूट ऑफ फेशन डिजाइनिंग (NIFD) पालडी-गुजरात से भी कई छात्र आकर इस कला को सीख चुके हैं। शांति निकेतन कला विश्वविद्यालय में बंगाल के कुछ छात्र उस्ता कला को सीख कर डिग्रीयों प्राप्त कर चुके हैं। बंगाल में सांस्कृतिक प्रोग्राम कराने वाली संस्था “मरुधारा” के भी तीन वर्कशॉप आयोजित किए जा चुके हैं। जिसमें 600 से 700 छात्रों ने उस्ता कला को सीखा है। इसके अलावा वस्त्र मंत्रालय भारत सरकार, इंडियन इन्स्टीट्यूट ऑफ क्राफ्ट म्यूजियम, राष्ट्र म्यूजियम अनेक संस्थानों के प्रशिक्षणार्थी व शोधार्थी उस्ता कला की विधि की जानकारी लेने के लिए आते रहते हैं। वर्ष 1989 में श्री सार्दुल पुष्करणा स्कूल बीकानेर जिसमें बुलाकी दास व्यास एवं कमल रंगा के सहयोग से 30 दिवसीय निःशुल्क कार्यशाला लगाई गई। इस कार्यशाला ने रिकार्ड तोड़ 90 दिवसीय कार्यशाला का रूप लिया और जिसमें छात्र छात्राओं ने उस्ता कला को सीखा।

NID की सहायता से उपयोगात्मक वस्तुओं में प्रयोग हो रहे हैं। इसके अतिरिक्त वनस्थली विद्यापीठ द्वारा आयोजित कार्यशालाओं में हनीफ जी को आमन्त्रित कर छात्राओं को स्वर्ण नक्काशी व उस्ता कला को समझने का अवसर प्रदान किया जाता है। वनस्थली विद्यापीठ के फाइन आर्ट्स, विभाग में 2009 में हुई साप्ताहिक कार्यशाला (27 जनवरी-31 जनवरी, 2009) में हनीफ उस्ता द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। उस्ता कला का प्रशिक्षण यहाँ प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले फ्रेस्को केम्प में दिया जाता है। यह कार्यक्रम वनस्थली विद्यापीठ द्वारा उस्ता कला को संरक्षण देने एवं लुप्त होने से बचाने के उद्देश्य से फाइन आर्ट विभाग की सहायता से किया जाता है। यहाँ आने वाले देश-विदेश के कलाकारों को फ्रेस्को के साथ-साथ उस्ता कला को भी समझने व सीखने का अवसर दिया जाता है।

मो. हनीफ उस्ता जी का कार्य इतना प्रभावशाली रहा कि इन्हें सन् 2018 में पुनः वनस्थली विद्यापीठ के फाइन आर्ट विभाग में “फैकल्टी डवलपमेंट प्रोग्राम” (FDP) में आयोजित कार्यशाला में (28 अगस्त, 2018-4 सितम्बर, 2018) आमन्त्रित किया गया। इसमें शिक्षकों एवं व्याख्याताओं को उस्ता कला का प्रशिक्षण दिया गया। भारत के विभिन्न क्षेत्रों से कलाकार इस कार्यशाला का हिस्सा बनने हेतु वनस्थली आये। विभिन्न कला विधाओं के साथ-साथ उस्ता कला को भी उन्हें समझने का अवसर प्राप्त हुआ।

इस कार्यशाला के पश्चात् वनस्थली विद्यापीठ के डिजाइन विभाग द्वारा आयोजित साप्ताहिक कार्यशाला “हैन्डस ऑन वर्कशॉप” के दौरान हनीफ जी को आमन्त्रित किया गया। कपूर, के सहयोग से सफलतापूर्वक आयोजित की गई। इस कार्यशाला में हनीफ जी द्वारा 21 छात्राओं को उस्ता कला के इतिहास व तकनीकी ज्ञान को साझा किया। इनके द्वारा छात्राओं के साथ मिलकर बड़े-बड़े फोटोफ्रेम (3'X4') तथा आभूषण बॉक्स, मोबाईल स्टैण्ड इत्यादि का प्रदर्शन किया।

जो कि आकर्षण का केन्द्र रहा। मो. हनीफ उस्ता द्वारा किये गये उस्ताकला के प्रति विभिन्न अध्ययन समाज लिए आने वाले समय में एक मिशाल स्थापित होंगे।